Dainik Jagran-New Delhi-15-02-2011

3 मंत्र कामयाबी के

मनपसंद जॉब पाने और कामयाबी की राह पर आगे बढ़ने के लिए 3 मंत्रों को जानना और साधना जरूरी होता है। कौन-से हैं ये मंत्र और कैसे साधें इन्हें, बता रहे हैं अमित भाटिया...

भारत में इस समय करीब 60 करोड़ युवा 25 साल से कम उम्र के हैं और इसमें से लगभग 32 करोड़ स्कूल-कॉलेजों में हैं। इसके बावजूद इनमें से सिर्फ 25 प्रतिशत ही ऐसे हैं, जो नियोक्ताओं की कसौटी पर जॉब पाने लायक योग्यता रखते हैं। अनुमान है कि दुनिया की दूसरी सबसे तेज गति से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था वाले देश भारत में वर्ष 2022 तक नौकरी चाहने वालों की संख्या 50 करोड़ हो जाएगी। इस स्थिति को देखते हुए धरती के इस सबसे युवा देश को नौकरी और स्किल के बीच की खाई को पाटने के लिए पुरजोर प्रयास करने की जरूरत है।

आज अधिकांश कंपनियों के नियोक्ताओं की दो प्रमुख चिंता होती है-अच्छे कर्मचारी की तलाश और उन्हें जरूरी प्रशिक्षण देना। किसी खास नौकरी के लिए आवश्यक स्किल और उसके लिए आवेदन करने वालों में वह योग्यता न होना 'स्किल गैप' कहलाता है। आज के समय में मनपसंद जॉब हासिल करने और तरक्की की सीढ़ियां लगातार चढ़ने के लिए 'तीन मंत्रों' को साधना बेहद जरूरी है। ये हैं-नॉलेज, स्किल्स और एटीट्यूड। इन तीनों योग्यताओं को धारण करने के साथ ही एक कामयाब करियर का प्लेटफॉर्म तैयार होता है।

नॉलेज

नॉलेज से अभिप्राय किसी विषय के सैद्धांतिक या तकनीकी समझ से है। यह किसी इमारत की मजबूत बुनियाद की तरह होता है। जिस तरह इमारत की मजबूती के लिए बुनियाद का मजबूत होना अतिआवश्यक होता है, उसी तरह किसी भी फील्ड में करियर बनाने और आगे बढ़ने के लिए उससे संबंधित विषय का गहरा ज्ञान होना आवश्यक है। गहन ज्ञान की बुनियाद पर बनी इमारत को मजबूती से खड़ा होने में स्किल्स और एटीट्यूड मददगार होते हैं। हम साइंस, आर्ट्स, कॉमर्स, ह्यूमनिटीज आदि से संबंधित जो भी कोर्स करते हैं, उससे विषय को गहराई से समझने में मदद मिलती है।

स्किल

वह स्किल ही है, जो किसी व्यक्ति के सैद्धांतिक ज्ञान को एक्शन में बदलता है। स्किल्ड यानी दक्ष होने पर ही कोई व्यक्ति किसी भी काम को पूरी कुशलता के साथ

JOB SKILL

पूरा करने में समर्थ हो पाता है। दक्षता सीखी और दुहराई जा सकती है। कहा जा सकता है कि अपने ज्ञान का व्यवहार में सही तरीके से इस्तेमाल करना ही स्किल है। स्किल की जरूरत प्रेजेंटेशन, सेल्स, मैनेजमेंट, कम्युनिकेशन, बीपीओ, बैंकिंग, एजुकेशन, एफएमसीजी, इंश्योरेंस, रीटेल, ट्रैवेल व टूरिज्म, केपीओ आदि में सबसे अधिक होती है। आज के समय में कारोबारी मुखिया और मानव संसाधन प्रबंधक ऐसे लोगों को नौकरी पर रखना चाहते हैं, जो हर तरह से स्किल्ड यानी दक्ष हों।

एटीट्यूड

इसका मतलब किसी व्यक्ति के रवैये या प्रवृत्ति से है। आप अन्य व्यक्तियों, परिस्थितियों या माहौल का सामना किस तरह करते हैं, यह आपकी प्रवृत्ति पर निर्भर करता है। एटीट्यूड एक तरह से मुख्य ड्राइवर की भूमिका में होता है, जो सबसे पहले दिखता है यानी आपके व्यवहार से आपके एटीट्यूड का पता चलता है। आज के समय में कामयाबी के लिए मोटीवेशन, टीमवर्क और कॉन्फिडेंस जैसे एटीट्यूड की जरूरत होती है। आज के बदले हुए समय में नियोक्ता ऐसे विश्वसनीय और जिम्मेदार लोगों को पसंद करते हैं जो समस्याओं को हल करने के साथ-साथ सामाजिक दक्षता भी रखते हों। साथ ही, वे अपने सहकर्मियों के साथ मिल-जुल कर काम करने में यकीन रखते हों। ऐसी योग्यता रखने वाले एम्प्लॉई की किसी भी संस्थान में मांग होती है और वे मूल्यवान मानव-पूंजी माने जाते हैं।

इंडस्ट्री से तालमेल

नॉलेज के साथ स्किल और एटीट्यूड को भी बढ़ाने के लिए देश के तमाम शैक्षिक संस्थानों में पहल की जा रही है। इसके तहत वहां स्टूडेंट्स को रेगुलर कोर्स के साथ-साथ स्किल और एटीट्यूड डेवलप करने के लिए खास कोर्स डिजाइन किए गए हैं। इसके तहत केस स्टडी पर आधारित प्रैक्टिकल कोर्स भी कराया जाता है। इसके लिए उन्हें ऐसी ट्रेंड फैकल्टी द्वारा प्रशिक्षण दिया जाता है, जो इंडस्ट्री की जरूरत को अच्छी तरह से समझते हैं। नियमित रूप से इंडस्ट्री के एक्सपर्ट्स के साथ भी राय-मशविरा किया जाता है और उनकी बदलती जरूरतों को जाना-समझा जाता है। उसी के अनुरूप ट्रेनर्स-टीचर्स को भी अपडेट किया जाता है। इस तरह से ट्रेंड स्टूडेंट्स को इंडस्ट्री द्वारा हाथों-हाथ लिया जाता है।

(अमित भाटिया 'एस्पायर ह्यूमन कैपिटल मैनेजमेंट', गुड़गांव के फाउंडर और सीईओ हैं)

प्रस्तुति : अरुण श्रीवास्तव